

**औंदफरी स्त्री.** (देश.) एक प्रकार की घास जिसके पत्ते गोल और छोटे, पीले फूल और पतली फलियाँ होती हैं।

**औंध स्त्री.** (देशज.) छप्पर/छाजन बनाने के लिए, बाँस की बत्तियों को आपस में बाँधने वाली रस्सी।

**औंधेरी/औंधेली स्त्री.** (देश.) औंधी जैसी लगने वाली घास, तिकोने पत्ते और लौंग सदृश लाल फूल वाली घास।

**ओक स्त्री.** (देश.) 1. अँजुरी, अंजलि 2. मतली, कै, उबकाई। **पुं.** (तत्.) 1. निवासस्थान, घर 2. पनाह 3. पक्षी 4. नक्षत्रों का मेल।

**ओकना स.क्रि.** (देश.) 1. 'ओ' जैसी ध्वनि करना या वमन करना 2. मँस की तरह चिल्लाना।

**ओकपति पुं.** (तत्.) 1. ग्रहों और नक्षत्रों का स्वामी, नक्षत्रपति 2. सूर्य।

**ओकलाई स्त्री.** (देश.) उल्टी (कै) करने की इच्छा, वमन करने की चाह।

**ओकार पुं.** (तत्.) ओ अक्षर की ध्वनि।

**ओकारांत वि.** (तत्.) जिस शब्द के अंत में 'ओ' स्वर आता हो, जैसे- खाओ, जीतो आदि।

**ओकारादि वि.** (तत्.) जिस शब्द के आदि में 'ओ' आता हो या 'ओ' से शुरू होने वाले शब्द, जैसे- ओकपति।

**ओख स्त्री.** (तद्.) 1. मिश्रण, मिलावट 2. सोने में तांबे का मिश्रण, चांदी में तांबे अथवा जस्ते की मिलावट 3. ज्वाला या जलन, दाह।

**ओखली स्त्री.** (तद्.) काठ का या पत्थर का बना हुआ गहरा बरतन जिसमें धान आदि अन्न को डालकर उसकी भूसी को अलग करने के लिए मूसल से कूटते हैं मुहा. ओखली में सिर देना- जानबूझकर किसी झंझट में पड़ना, कष्ट झेलने पर उतारू होना।

**ओखा वि.** (देश.) 1. रूखा-सूखा 2. कठिन 3. खोटा, मिलावटी 4. झीना 5. ओछा, हलका विलो. चोखा।

**ओखाण/ओखान पुं.** (तद्.) आख्यान, उपाख्यान।

**ओखिया वि.** (तद्.) 1. जो अशुद्ध हो या जिसमें मिलावट हो 2. सोने, चांदी का आभूषण, जिसमें तांबे की मिलावट हो, बट्टा मिला गहना।

**ओगल पुं.** (तद्.) अनुर्वर या ऊसर भूमि, कुआं।

**ओघ पुं.** (तत्.) 1. समूह, ढेर, अधिकता, बाढ़ 2. (जल की) धारा, प्रवाह।

**ओछा वि.** (देश.) तुच्छ, क्षुद्र, खोटा, छिछोरा हलका जिसमें गंभीरता न हो।

**ओछाई स्त्री.** (देश.) नीचता, छिछोरापन, क्षुद्रता।

**ओछापन पुं.** (देश.) दे. ओछाई।

**ओछी वि.** (देश.) जो तुच्छता से भरी हो, जिस स्त्री में ओछापन हो जैसे- ओछी बात, ओछी राजनीति।

**ओज पुं.** (तत्.) 1. आत्मिक बल, तेज, दीप्ति; शरीर की कांति 2. बल, प्रताप 3. उजाला, तेज, प्रकाश 4. काव्य. कविता का वह गुण जिससे सुननेवाले के मन में आवेश उत्पन्न हो।

**ओजस्विता स्त्री.** (तत्.) 1. तेज 2. दीप्ति 3. प्रताप 4. प्रभावोत्पादकता।

**ओजस्वी वि.** (तत्.) 1. ओजभरा, जोश पैदा करने वाला 2. बल-वीर्यशाली, शक्तिमान, प्रतापी 3. दीप्त, चमकीला।

**ओजित वि.** (तत्.) ओजस्वी, ओजयुक्त।

**ओजोन स्त्री.** (अं.) रसा. ऑक्सीजन का एक अन्य रूप जो अति अभिक्रियाशील फीकी नीली सी या कहे रंगहीन गैस है जिसकी ऊपरी वायुमंडल में स्थित पतली परत पराबैंगनी किरणों से पृथ्वी की रक्षा करती है और जिसकी उपस्थिति धरती के निचले स्तर पर हानिकारक होती है।